स्वच्छ भारत अभियान २.० के ठोस प्रबंधन के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

डॉ. आरती गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर,
बियानी बी.एड. गर्ल्स कॉलेज, जयपुर

मोनिका चौधरी
बी.एड.एम.एड. छात्रा,
बियानी बी.एड. गर्ल्स कॉलेज, जयपुर

सारांश

स्वच्छ भारत अभ्यिान के तहत भारत सरकार द्वारा कई प्रावधान दिये गये व्यक्तिगत पारिवारिक शौचालय इकाईयों का निर्माण एवं उपयोग करने पर प्रोत्साहन राशि के रूप में 12000 केन्द्र का अंश 60 प्रतिशत यानी 7200रू/– एवं राज्य का अंश 40 प्रतिशत 4800 रू इस प्रकार 12000 रूपये दिये जाने का प्रावधान है। सरकार ने 2 अक्टूम्बर 2021 तक खुले शौच मुक्त भारत को हासिल करने का लक्ष्य रखा है तथा सरकार ने 2 अक्टूम्बर 2026 महात्मा गांधी के जन्म वर्षगांठ तक ग्रामीण भारत में 1.96 लाख करोड़ रूपये को अनुमानित लागत के 1.2 करोड़ शौचालयों का निर्माण करके खुले शौच मुक्त भारत को हासिल करने का लक्ष्य रखा है। भारत सरकार ने शहरी क्षेत्रों के लिए स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत 1.04 करोड़ परिवरों को लक्षित करते हुए 2.5 लाख सार्वजनिक शौचालयों और प्रत्येक शहर को एक ठोस अपशिष्ट प्रबंध की सुविधा प्रदान करना है। इस कार्यक्रम के तहत आवासीय क्षेत्रों ने जहाँ व्यक्तिगत घरेलू शौचालयों का निर्माण करना मुश्किल है वहाँ सामुदायिक शौचालयों का निर्माण करना।

की वर्ड : *स्वच्छता, स्वच्छ भारत अभियान, जागरूकता*

१.प्रस्तावना

भारत में ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम, भारत सरकार की प्रथम पंचवर्षीय योजना के रूप में 1954 में शुरू किया गया था। 1981 की जनगणना से पता चला की ग्रामीण स्वच्छता कवरेज मात्र 1 प्रतिशत था। वर्ष 1981–90 के दौरान पेयजल एवं स्वच्छता के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दशक में ग्रामीण स्वच्छता पर जोर देना शुरू किया गया। भारत सरकार ने वर्ष 1986 में केन्द्रिय ग्रामीण जिसका स्वच्छता कार्यक्रम (सीआरएसपी) शुरू किया जिसका उद्देश्य प्राथमिक रूप से ग्रामीण लोंगो के जीवन स्तर में सुधार लाना तथा महिलाओं को निजता एवं सम्मान प्रदान करना था। 1999 से सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत मांग जनित दृष्टिकोण ने ग्रामीण लोगों के बीच जागरूकता तथा स्वच्छता सुविधाओं के लिए मांग सम्पन्न में वृद्धि करने के लिए सूचना, शिक्षा एवं सम्प्रेषण मानव संसाधन विकास क्षमता विकास गतिविधियों पर अधिक जोर दिया। स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता के लिए छात्रों को स्वच्छता के लिए शिक्षित करना सबसे बडा लक्ष्य है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य देश के प्रत्येक व्यक्ति को स्वच्छता के प्रति तथा भारत सरकार द्वारा चलाये गये स्वच्छ भारत अभियान के लिए जागरूक कर इस अभियान को सफल बनाना है। बच्चों तथा स्कूल एवं कॉलेज के विद्यार्थियों, प्रशिक्षणार्थियों को शुरूआत से ही स्वच्छता रखने के तरीके सिखाये जाना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में स्वच्दता एवं साफ सफाई की आदत हो तथा जीवन शैली बन सके। इस आदत व जागरूकता के

लिए यह आवश्यक है कि हम ऐसे भावी अध्यापकों का निर्माण करे जो विद्यार्थियों को केवल मार्गदर्शन न करके उन्हें भौतिक रूप से दक्ष तथा स्वच्छता एवं स्वच्छ भारत अभियान के लिए जागरूक कर सके। एक अच्छे अध्यापक का यह कर्तव्य है कि वह यह देखे कि छात्र राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी एवं जागरूक नागरिक बन सके, क्योंकि छात्र ही राष्ट्र का निर्माता है।

२.समस्या का औचित्य

प्रत्येक समस्या तथा प्रत्येक कार्य को करने के लिए कोई ना कोई कारण होता है। उसी प्रकार मेरी समस्या व शोध की पीछे भी एक कारण निहित है। सरकार अनेक योजनाएँ चलाती है जिससे की प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक व आर्थिक रूप से सुदृढ़ हो सके। परन्तु सरकार द्वारा चलाई गई योजनाओं के प्रति व्यक्ति जागरूक ही नहीं होगे तो वे इस योजनाओं तथा सुविधाओं का लाभ कैसे उठा सकेंगे। समाज में जागरूकता लाने के लिए एक शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। क्योंकि वहीं समाज व भावी पीढ़ी का निर्माता होता है। अतः इसके लिए मैने इस शोध में छात्राध्यापकों का चयन किया क्योंकि व भावी शिक्षक है। छात्राध्याकपकों को जागरूक कर हम स्वच्छ भारत अभियान को और अधिक सफल बनाने का प्रयासय कर सकते है। तथा समाज में स्वच्छता की जागरूकाता को बढ़ा सकते है। अतः प्रशिक्षणार्थी स्वच्छ भारत अभियान के प्रति कितने जागरूक है तथा उनकी क्या अभिवृत्ति है यह जानना आवश्यक है।

३.सम्बन्धित साहित्य

धनशेखर, जी. (2022) "एटेम्प्ट टू स्टडी द अवेयरनेस ऑफ प्राईमरी एण्ड मिडिल स्कूल टीचर्स रिगार्डिंग हैल्थ एण्ड क्लीनिनेस अमोंग द स्कूल चिल्ड्रन।" इस अध्ययन के अन्तर्गत प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता हेतु जागृति परीक्षण किया गया। इसके अन्तर्गत 1200 व्यक्तियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया तथा उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग सर्वेक्षण हेतु किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्वास्थ्य व स्वच्छता शिक्षा हेतु नूतन आयामों को बढ़ावा देना था। इस अध्ययन के निष्कर्ष रूप में शोधकर्त्ता ने पाया कि छात्रों, विद्यार्थियों को स्वास्थ्य शिक्षा का उत्तम ज्ञान प्रशिक्षण द्वारा दिया जाये तथा विद्यालयी शिक्षा में स्वच्छता भी एक विषय रूप में अपनायी जानी चाहिए।

दत्ता आर.एस. (2023) : विद्यालयों में स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने वाले छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन।" इस अध्ययन के अन्तर्गत कलकत्ता तथा बम्बई शहरों के माध्यमिक विद्यालयों के 560 विद्यार्थियों को न्यादर्श हेतु चुना, जो कि विभिन्न आयु, अनुभव, धर्म व लिंग से सम्बन्धित थे। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने वाले छात्रों का दृष्टिकोण का पता लगाना था। इस अध्ययन के उद्देश्य के निर्धारण हेतु मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में शोधकर्त्ता ने पाया कि विद्यालयों में स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यार्थियों का दृष्टिकोण सकारात्मक था।

भण्डाकर, के.एम. (2022) : "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों व छात्रों का विद्यालयी स्वच्छता के प्रति ज्ञान व अभिवृत्ति का अध्ययन।" इस अध्ययन के अन्तर्गत माध्यमिक विद्यालयी बालक व छात्रों का जनसंख्या शिक्षा तथा स्वच्छता के प्रति ज्ञान व अभिवृत्ति का स्तर पता लगाना मुख्य उद्देश्य था। इस अध्ययन के निष्कर्ष स्वरूप शोधकर्त्ता ने पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयी छात्रों व विद्यार्थियों की स्वच्छता के प्रति अभिवृत्ति उच्च तथा सकारात्मक थी।

माथुर एस. (2021) : "विद्यार्थियों की सृजनात्मक अधिगम तथा स्वच्छता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।" इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता तथा स्वच्छता के प्रति कैसी अभिवृत्ति है इसका पता लगाना था। इस हेतु न्यादर्श के लिए 1507 विद्यार्थियों का चयन किया गया तथा

मानकीकृत अध्ययन उपकरण का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्ष (फलस्वरूप) अनुसंधानकर्त्ता ने पाया कि विद्यार्थियों में सृजनात्मकता तथा स्वच्छता के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तर की थी।

मिश्रा पी. (2020) : "पॉपूलेशन एजूकेशन" ए जिओ एन्वायरमेन्टल स्टडी (विद स्पेशल रेफरेन्स टू चित्रकूट मण्डल)" इस अध्ययन के उद्देश्य जनसंख्या वृद्धि के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों का अवलोकन करना एवं शिक्षा द्वारा इसके हल खोजने हेतु जाँच–पड़ताल करना था। इस अध्ययन हेतु चित्रकूट मण्डल के 2019 व्यक्तियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष स्वरूप शोधकर्त्ता ने पाया कि जनसंख्या वृद्धि के पर्यावरण पर अनेक दुष्प्रभाव पड़ते हैं जिनका बालबाड़ी, आँगनबाड़ी एवं युवा संगठनों द्वारा शिक्षा के प्रसार द्वारा ही सम्भव है। प्रस्तुत शोध में स्वच्छ भारत अभियान 2.0 के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना है। इससे सम्बन्धित अध्ययन निम्न है –धनशेखर, जी. (2022), दत्ता आर.एस. (2023), भण्डाकर, के.एम. (2022), माथुर एस. (2021), मिश्रा पी. (2020) अतः उपरोक्त शोध अध्ययनों में स्वच्छता एवं सुरक्षा सम्बन्धित अनेक शोध कार्य किये गये है। उन्होंने स्वच्छ भारत अभियान 2.0 के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन किया है। लेकिन स्वच्छ भारत अभियान 2.0 के ठोस प्रबंधन के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन कार्य अभी नहीं हुआ है। इसलिए शोधकर्त्री ने इस समस्या का चयन किया है।

४.समस्या कथन

स्वच्छ भारत अभियान 2.0 के ठोस प्रबंधन के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

५.उद्देश्य

१.स्वच्छ भारत अभियान 2.0 के ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रम के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन।

६.परिकल्पना

१.स्वच्छ भारत अभियान 2.0 के ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रम के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

७.अध्ययन में प्रयुक्त अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति एवं प्रस्तावित उद्देश्यों को देखते हुए इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग दत्त संकलन हेतु किया गया है।

८.अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श

न्यादर्श के अन्तर्गत यादृच्छिक विधि का प्रयोग करते हुए सीकर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के 200 विद्यालयी विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

९.अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में अप्रमापीकृत स्वनिर्मित प्रश्नावली (स्वच्छ भारत अभियान विद्यार्थी) का प्रयोग आँकड़ों के संग्रहण हेतु किया गया है। प्रश्नावली में 30 प्रश्नों का समावेश है जिसके 3 आयाम है – स्वच्छ भारत अभियान, स्वच्छता एवं जागरूकता है।

परिकल्पना :स्वच्छ भारत अभियान 2.0 के ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रम के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

क्र.सं.	समूह	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	टी मूल्य (t)	सार्थकता का स्तर	
						0.05 पर	0.01 पर
1.	उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय बालक	100	150.52	15.658	2.00	अस्वीकृत	स्वीकृत
2.	उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयी बालिका	100	144.82	12.543			

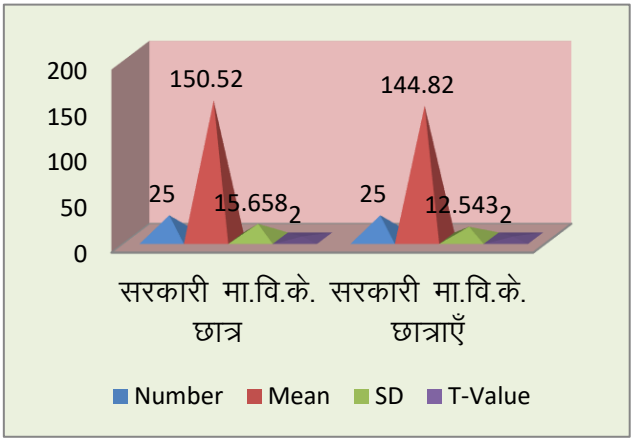

१०.परिणाम

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि सरकारी एवं सरकारी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयी विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 150.52 व 144.82 प्राप्त हुआ जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 15.658 व 12.543 प्राप्त हुआ। दोनों समूह के मध्यमानों व प्रमाणिक विचलन के मध्य तुलना करने पर टी–अनुपात का मान 2.00 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.05 (1.98) पर अस्वीकृत है तथा 0.01 स्तर (2.63) पर स्वीकृत है। t तालिका में 98 के सामने 0.05 का मान 1.98 है जबकि 0.01 का मान 2.63 है। परन्तु गणना से प्राप्त t का मान अधिक है। अतः शोध कार्य हेतु पूर्व में निर्मित परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं सरकारी विद्यालयी विद्यार्थियों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, अस्वीकार की जाती है। अर्थात् सरकारी एवं सरकारी विद्यालयी विद्यार्थियों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया। यहाँ पर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के मध्यमान सरकारी विद्यालयों के छात्रों के मध्यमान से अधिक है अर्थात् सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की तुलना में बेहतर है। लेकिन परिकल्पना 0.01 स्तर पर स्वीकृत है। अतः हम यह कह सकते हैं कि कुछ सरकारी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति में ज्यादा अन्तर नहीं है। अन्ततः हम यह कह सकते हैं कि सरकारी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तर की पायी गयी।

११.निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के बालकों की अभिवृत्ति उच्च स्तर की है लेकिन फिर भी इन दोनों समूहों की अभिवृत्ति में अधिक स्पष्ट अन्तर नहीं है।अत शोधकर्ता द्वारा पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना सरकारी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के एवं बालिकाओं की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकार की जाती है। अन्तत यह कहा जा सकता है कि सरकारी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के बालकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. धनशेखर, जी. (2023). ''एटेम्प्ट टू स्टडी द अवेयरनेस ऑफ प्राईमरी एण्ड मिडिल स्कूल टीचर्स रिगार्डिंग हैल्थ एण्ड क्लीनिनेस अमोंग द स्कूल चिल्ड्रन'' एम.फिल. हेतु, मदुरई विश्वविद्यालय
२. दत्ता, आर. एस. (2023). विद्यालयों में स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने वाले बालकों के दृष्टिकोण का अध्ययन''एम.एड. हेतु, कलकत्ता विश्वविद्यालय
३. भण्डाकर, के.एम. (2022). ''माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों व छात्रों का विद्यालयी स्वच्छता के प्रति ज्ञान व अभिवृत्ति का अध्ययन'' पी.एच.डी. स्तर हेतु, गुजरात विश्वविद्यालय
४. माथुर, एस. (2021). ''विद्यार्थियों की सृजनात्मक अधिगम तथा स्वच्छता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' पी.एच.डी. स्तर हेतु, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय
५. मिश्रा, पी. (2020). ''पॉपूलेशन एजूकेशन'' ए जिओ एन्वायरमेन्टल स्टडी (विद स्पेशल रेफरेन्स टू चित्रकूट मण्डल)'' पी.एच.डी. स्तर हेतु, पटना विश्वविद्यालय
६. www.cleaniness.com
७. www.government.india.in
८. www.wikipedia.com
९. www.swacchbharat.com
१०. www.cleanindiagreenindia.in
११. www.shodgangotri.com